



## तिरुविदैमरुदुर कुपैय्या कल्याणसुंदरम अकादेमी रत्न

### THIRUVIDAIMARUDUR KUPPIAH KALYANASUNDARAM Fellowship of Sangeet Natak Akademi

Born on 1 March 1932 in Thiruvaidaimarudur, Tamil Nadu, Shri Thiruvaidaimarudur Kuppiah Kalyanasundaram inherited the traditions of the Thanjavur school of Bharatanatyam from his forefathers. He imbibed the art from his father Guru Kuppiah Pillai; brother, Mahalingam Pillai; brother-in-law, Govindaraja Pillai; and sister, Karunambal. He learnt Carnatic music from Alathur Panchapakesa Iyer and Shrimati Nagalakshmi; and Mridangam from Raghunatha Iyer and his brother, Marudappa Pillai.

Widely respected as a guru and choreographer, Shri Thiruvaidaimarudur Kuppiah Kalyanasundaram has produced many dance-dramas on traditional themes, as well as compositions based on the works of poets in various languages such as *Jaya Shankara*, *Shakti*, *Ilakkiya Bharatham*, *Om Saravana Bhava*, to name a few. He

has travelled extensively presenting his productions and conducting workshops and lecture-demonstrations within the country and abroad including U.S.A., Indonesia, Canada, Singapore, Malaysia, Mexico and Europe. Shri Kalyanasundaram has been responsible for training an array of prominent dancers of the present generation.

Among the awards he has received are the Sarngadeva Fellowship of the Sursingar Samsad (1988); Kalaimamani from the Tamil Nadu Eyal Isai Nataka Manram (1994); Sangeet Natak Akademi Award (1999-2000); Nada Brahman from Narada Gana Sabha (2016); and Natya Kalashikamani from the Indian Fine Arts Society (2017).

Shri Thiruvaidaimarudur Kuppiah Kalyanasundaram is elected Fellow of Sangeet Natak Akademi for his contribution to Indian dance.

तमिलनाडु के तिरुविदैमरुदुर में 1 मार्च 1932 को जन्मे, श्री तिरुविदैमरुदुर कुपैय्या कल्याणसुंदरम को भरतनाट्यम के तंजावुर स्कूल की परम्पराएँ अपने पूर्वजों से विरासत में मिली हैं। अपने पिता गुरु कुपैय्या पिल्लई; भाई, महालिंगम पिल्लई; जीजा, गोविंदराजा पिल्लई; और बहन, करुणाम्बल से भरतनाट्यम कला को आपने आत्मसात किया है। अलातुर पंचपकेश अय्यर और श्रीमती नागलक्ष्मी से आपने कर्नाटक संगीत का प्रशिक्षण लिया; और रघुनाथ अय्यर और उनके भाई, मरुदप्पा पिल्लई से मृदंगम सीखा।

गुरु और नृत्य निर्देशक के रूप में व्यापक रूप से सम्मानित, श्री तिरुविदैमरुदुर कुपैय्या कल्याणसुंदरम ने पारम्परिक विषयों पर कई नृत्य-नाटकों का निर्माण किया है, साथ ही विभिन्न भाषाओं के कवियों यथा जय शंकर, शक्ति, इलक्किया भारतम, ओम सरवन भव आदि की कविताओं को नृत्यबद्ध किया है। आपने संयुक्त राज्य अमेरिका, इंडोनेशिया, कनाडा, सिंगापुर, मलेशिया, मैक्सिको और

यूरोप सहित देश-विदेश में व्यापक रूप से अपनी प्रस्तुतियाँ दी हैं और कार्यशालाओं और व्याख्यान-प्रदर्शनों का आयोजन किया है। वर्तमान पीढ़ी के कई प्रतिष्ठित नर्तकों को प्रशिक्षित करने का श्रेय भी श्री कल्याणसुंदरम को जाता है।

आपको मिले पुरस्कारों में सुरसिंगार संसद द्वारा दिया गया सारंगदेव फ़ैलोशिप (1988); तमिलनाडु इयल इसई नाटक मनरम द्वारा दिया गया कलइमामणि (1994); संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार (1999-2000); नारद गण सभा द्वारा दिया गया नाद ब्राह्मण (2016); और इंडियन फाइन आर्ट्स सोसाइटी द्वारा दिया गया नाट्य कलाशिखामणि पुरस्कार शामिल हैं।

भारतीय नृत्य के क्षेत्र में योगदान के लिए तिरुविदैमरुदुर कुपैय्या कल्याणसुंदरम को संगीत नाटक अकादेमी का रत्न सदस्य चुना गया है।

